

द्वितीय अधिकरण

सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोक की आवश्यकता एवं महत्व -

द्वितीय अधिकरण

सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन की आवश्यकता एवं महत्व -

मानव ज्ञान के तनी पक्ष होते हैं, ज्ञान संकलन, ज्ञान का सम्प्रेषण तथा ज्ञान में वृद्धि करना, किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधार शिला के समान है, जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता है, यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन होने की संभावना रहती है, अथवा पुनरावृत्ति भी हो सकती है, इसके आभाव में शोधकर्ता सही दिशा में एक पत्र भी आगे नहीं बढ़ा सकता है।

प्रत्येक शोधकर्ता के लिए यह जरूरी हो जाता है, कि वह जिन क्षेत्रों से संबंधित अब तक हुए उपलब्ध शोध कार्यों का पुनरावलोकन करें। संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण करने की समस्या के संबंध में सैद्धांतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान होता है। इसकी जानकारी होने पर किन पहलुओं को लेकर जिन समस्याओं पर शोध कार्य हो चुका है, उनके अनावश्यक पुनरावृत्ति की संभावना नहीं रहती। संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन शोध कार्यों की विविध विधियों से संबंधित दृष्टिकोण का विकास करता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वानों ने अपने मत प्रस्तुत किए हैं।

जॉन डब्ल्यू के अनुसार- व्यवहारिक दृष्टि से सारा ज्ञान पुस्तकों व पुस्तकालयों से प्राप्त किया है, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित व सुरक्षित रखता है, ज्ञान के आपार भंडार में मानव का निरंतर योग सभी क्षेत्रों में इसके विकास का आधार है।

गुडवार तथा स्केट्स के अनुसार - जिस प्रकार एक कुशल चिकित्सक के लिए आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंध आधुनिकतम खोजों से

परिचित होता रहें, उसी प्रकार जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए, उस से संबंधित सूचनाओं, समस्याओं एवं तयों का अध्ययन जरूरी होता है।

डब्ल्यू आर. बॉर्ग के शब्दों में - किसी के क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के सामान होता है, जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते हैं, तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की संभावना रहती है।

कार्टर पी.गुड के अनुसार- साहित्य के आधार पर भंडार की कुंजी अर्थपूर्ण समस्या और विश्लेषणीय परिकल्पना के स्त्रोंत का द्वारा खोल देती है, तथा समस्या के परिभाषीकरण, अध्ययनविधि के चयन तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करता है। वास्तव में रचनात्मक मौलिक चिंतन आदि के विकास हेतु विस्तृत एवं गहन अध्ययन आवश्यक है।

रमल के अनुसार- नियमानुसार कोई भी शोध से संबंधित लिखित विवरण तब उपयुक्त नहीं समझा जा सकता, जब तक उस शोध से संबंधित साहित्य का आधार, उस विवरण में न हो। अनुसंधानकर्ता के कार्यों का परीक्षण करते हुए अनुसंधान की विधि, तथ्यों, विचारों तथा उन सहायक ग्रंथों से अवगत होता है, जो उसके लिए अत्यन्त लाभदायक एवं सहायक सिद्ध होता है।

1. साहित्य के पुनरावलोकन से शोधकर्ता को विषय की गहराई तक पहुँचने में सफलता मिलती है।
2. शोधकर्ता यह जान जाता है, कि संबंधित क्षेत्र में अभी तक कितना कार्य हो चुका है, तथा किना करना शेष है।
3. पुनरावलोकन में अवांछित तत्वों को निकाल दिया जाता है, तथा शेष को महत्वपूर्ण एवं संक्षिप्त बनाने में सहायता मिलती है।
4. शोधकर्ता जागरूक हो जाता है, तथा समस्या के सभी पक्षों पर सोच विचार करता है।

5. शोध में प्रयुक्त की जाने वाली विधियों, न्यादर्श, परीक्षण तथा वर्गीकरण करने हेतु मार्गदर्शन मिलता है, संक्षेप में संबंधित साहित्य के अध्ययन की आवश्यकता के बिन्दु हैं -

- (1) विषय का व्यापक एवं गहन अध्ययन
- (2) पुनरावृत्ति से रक्षा
- (3) अंतदृष्टि का विकास
- (4) अनुसंधान का नियोजन
- (5) उपयुक्त प्रविधि व उपकरण के चयन में शोध लिखने के ढंग व प्रस्तुति में
- (6) अनुसंधानकर्ता में आत्मविश्वास उत्पन्न करने में समस्या के अध्ययन में एक सूझ पैदा करने की दृष्टि से
- (7) समस्या के अध्ययन में एक समझ पैदा करने की दृष्टि से

इस प्रकार पूर्व शोधों का पुनरावलोकन वर्तमान में किए जाने वाले शोधों हेतु प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है, संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से ही समस्या चयन, परिकल्पना निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है। संदर्भित साहित्य का अध्ययन ही शोधार्थी को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता है। जहाँ, वह अपने क्षेत्र की नवीन समस्याओं से परिचित होता है। मानव का ज्ञान पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित व अप्रकाशित शोध प्रबंधों, रिपोर्ट्स, अभिलेखों आदि में संचित रूप में रहता है। वास्तव में संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना यह उचित दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक उसे यह ज्ञान न हो, कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है, तथा उसके निष्कर्ष क्या रहे? अतः संबंधित साहित्य अनुसंधान के सभी स्तरों पर सहायता प्रदान करता है, इस प्रकार वह अध्ययनकर्ता के लिए पथ निर्देशक का कार्य करता है।

बार्ज के अनुसार- शैक्षिक अनुसंधान से संबंधित साहित्य का अध्ययन ही अनुसंधानकर्ता के लिए किसी विशेष मूल तक पहुँचने का महत्वपूर्ण साधन है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विशिष्ट विद्यार्थियों के विकास में गैर सरकारी संस्थाओं के शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन करना है। मान्यता यह है कि किसी भी देश की शैक्षिक व्यवस्था का दायित्व है कि प्रत्येक विशिष्ट बालक के लिए उनकी विशिष्टता के अनुसार कार्यक्रम। गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए, इसके लिए प्रत्येक बालक को उनकी विशिष्टता के अनुसार वर्गीकृत करके उनके लिए विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित किए जाए, तब ही इन गतिविधियों द्वारा बालक के संज्ञात्मक, भानात्मक व मनोगत्यात्मक पक्षों का विकास हो सकता है। अध्ययन से संबंधित इन मान्यताओं के आधार पर संबंध साहित्य के अध्ययन से प्राप्त अनुसंधानों के संक्षिप्त विवरण को निम्न संदर्भों में केंद्रित करने का प्रयास किया गया है।

1. समान्वित शिक्षा से संबंध अध्ययन
2. विशिष्ट बालकों के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों से संबद्ध अध्ययन
3. विशिष्ट बालकों के अभिभावक, अध्यापक, समाज एवं विशिष्ट बालकों की शिक्षा से संबद्ध अध्ययन
4. विशिष्ट बालकों के व्यक्तिगत गुणों से सम्बद्ध अध्ययन
5. गैर सरकारी संगठनों के शैक्षिक प्रयासों से सम्बद्ध अध्ययन

1. समान्वित शिक्षा से सम्बद्ध अध्ययन -

ए सैन्डल एवं अन्य (2004)- समावेशी शिक्षा में अभ्यास का अध्ययन किया प्रस्तुत शोध का उद्देश्य

- (1) विभिन्न विकलांग विद्यालयों में शैक्षिक सुविधाओं की पहचान व निरीक्षण करना।

- (2) विकलांग बच्चों में अधिगम को बढ़ाने के लिए विभिन्न सुविधाओं की प्रकृति जाँच करना
- (3) दो विकलांग विद्यार्थियों की विभिन्न वृत्त रूपरेखा तैयार करना

2. पी.सी. विश्वास एवं ए. पाण्डा (2004)- समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं अवरोध का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य विकलांग बच्चों को समावेशी शिक्षा प्रदान करने के प्रति अभिवृत्ति अवरोध की खोज और उसकी प्रकृति का अध्ययन करना है।

न्यादर्श जालीस्वार (उड़ीसा)- के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में कक्षा 9 व 11 में अध्ययनरत् 200 विद्यार्थियों को सोदेश्य न्यायदर्शन द्वारा चयनित किया गया। निष्कर्षतः पाया गया कि विद्यार्थियों के दो समूहों में विकलांग बालकों के समावेशी शिक्षा ग्रहण करने के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई।

ज्योतिमयी नायक (2008)- समावेश शिक्षा के प्रति अध्यापक एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया, प्रयुक्त अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार से थे - विकलांग बच्चों के अभिभावकों का सम्मिलित शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना। सामान्य बच्चों के अभिभावकों का सम्मिलित शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना। सामान्य विद्यालयों में अध्यापक शिक्षकों एवं सामान्य बच्चों के अभिभावकों का सम्मिलित शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

आर.स. केवट (2009)- समेकित शिक्षा के अंतर्गत सामान्य एवं विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन किया, प्रस्तुत शोध में विकलांग बच्चों की समेकित शिक्षा के अंतर्गत सामान्य एवं विशेष विद्यालयों के अध्ययनरत् बालक-बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन किया गया। शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार थे -

(1) विशिष्ट विद्यालयों के विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।

(2) सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत विकलांग बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनकी सामाजिक परिस्थिति की स्थिति का अध्ययन करना।

(3) चयनित विद्यालयों के विकलांग बालकों से मिलकर महत्वपूर्ण तथ्यों को प्राप्त कर उनका सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा शोध निष्कर्ष प्राप्त करना।

एम. रेज्युस नैनले एवं अन्य (2010)- समावेशी शिक्षा का शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिकसंवेगों पर प्रभाव का अध्ययन किया, प्रस्तुत शोध का उद्देश्य समावेशी शिक्षा का शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक संवेग पर प्रभाव अध्ययन करना। न्यायदर्शन हेतु उच्च प्राथमिक विद्यालयों से 27,745 विद्यार्थियों को चयनित किया गया प्रदत्त संकलन शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण में भाषा एवं अंकगणित परीक्षण प्रश्नावली, अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया, तथा निष्कर्ष पाया गया कि विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि पर समावेशी व असमावेशी कक्षाओं का कोई अंतर नहीं पाया गया, किन्तु सामाजिक संवेगता पर समावेशी व असमावेशी शिक्षा का न्यूनतम प्रभाव देखा गया।

दीपक शर्मा - भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अभिभावकों का समावेशी शिक्षा में कार्यान्वयन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया, प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भारत में समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन में विभिन्न क्षेत्रों के अभिभावकों के अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना भारत में समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन में अभिभावकों की अभिवृत्ति निम्नलिखित संदर्भों पर तुलना करना

1. मेट्रोसिटी के पुरुष-महिला अभिभावक।

2. नगरों के पुरुष-महिला अभिभावक।

3. गाँव के पुरुष व महिला अभिभावक। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सामान्य प्रायिकता न्यायदर्शन विधि द्वारा 150 अभिभावकों के चयनित किया गया

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया प्रदत्त विश्लेषण हेतु अध्ययन टी'टेय का प्रयोग किया गया निस्कर्षत : पाया गया - भारत में समावेशी शिक्षा ने कार्यान्वयन में मेट्रो सिटी में रहने वाले पुरुष व महिला अभिभावकों के अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, नगरीय पुरुष व महिला अभिभावकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।

(4) गाँव के पुरुष महिला अभिभावकों की अभिवृत्ति ने सार्थक अंतर पाया गया।

पी.रेनकूला (2012)- दृष्टि बाधित बच्चों के समावेशी शिक्षा पर अभिवृत्ति प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य दृष्टिकोण बच्चों के समावेशित शिक्षा पर अभिवृत्ति स्केल निर्माण करना, स्केल आन्ध्रप्रदेश के चितूर जिले के 370 अध्यापकों द्वारा विकसित व मानकीकृत किया गया अभिवृत्ति स्केल से निस्कर्ष पड़ आइटम चयनित किया गया, जिन्हें 5 भागों में बाँटा गया, ये समावेशी का सम्प्रत्यय, सामान्य अध्यापक, सामान्य बच्चों, विशिष्ट बच्चों तथा अभिभावक।